क्रांतिदूत (समीक्षा)



प्राम्भिक शिक्षा सरस्वती शिशु मंदिर (आर एस एस द्वारा संचालित) विद्यालय में होने के कारण भारतीय स्वन्त्रता संग्राम के अग्रणी क्रान्तिदूतों के बारे में अच्छी खासी जानकारी प्राप्त हो गई थी। घर में पिताजी किताबों और संगीत के शौक़ीन थे तो शायद पढ़ना और संगीत सुनना विरासत में मिला। क्रांतिकारियों में मुख्यतः आज़ाद से संबंधित अनेक वाक़ये पिताजी सुनाते थे। शायद स्कूल और घर के इस माहौल ने ही देश के प्रति और आज़ादी की बलिवेदी पर प्राणों की आहुति देने वाले इन सेनानियों के प्रति मन को अगाध श्रद्धा से भर दिया। आज इस भीड़भाड़ और भागमभाग भरी जिंदगी में कई सालों बाद लेखक मनीष श्रीवास्तव जी की किताब "क्रांतिदूत" ने पुनः उसी दौर को मन के दरवाजे पर ला खड़ा किया। वास्तव में मनीष जी से जुड़ने और उनके द्वारा लिखित क्रांतिदूत पढ़ने का सौभाग्य मेरे लिए "बिनु हरि कृपा मिलहि नहीं संता" को चरितार्थ करने जैसा है।

झांसी स्वतंत्रता संग्राम का प्रारंभिक और मुख्य केंद्र रहा है। लेखक ने अपनी "क्रांतिदूत" श्रृंखला के "झांसी फाइल्स" में इसी को सामने लाने का प्रयास किया है। व्यक्तिगत रूप से मेरे लिए सबसे सौभाग्य की बात यह है कि मैं ऐसे व्यक्ति को पढ़ रही हूँ जिनके पूज्य नाना श्री मास्टर रुद्रनारायण सिंह जी ही झांसी में आज़ाद, भगवान दास, सदाशिव, बलवंत (भगतसिंह), शचीन्द्रनाथ जैसे महान क्रांतिकारियों के गतिविधियों के नियंत्रक हैं।

झांसी फाइल्स की शुरुआत चंद्रशेखर आज़ाद, अशफ़ाक़ उल्लाह खान, रामप्रसाद बिस्मिल और राजगुरु की बातचीत से शुरू होती है। जो अपने संगठन के लिए अर्थ और अस्त्र जुटाने के लिए चिंतित हैं क्योंकि इन दोनों के बिना संगठन के उद्देश्यों की पूर्ति होना कठिन था। बातों-बातों में ही इनके क्रांतिकारी दिमाग में एक क्रांतिकारी योजना का जन्म हुआ जो इतिहास में "काकोरी कांड" के नाम से जाना गया।

क्रांतिदूत की इस श्रृंखला में मुख्य रूप से आज़ाद के झांसी में गुप्तरूप से प्रवास और इस दौरान अपने मातृभूमि को स्वतंत्र कराने की योजनाओं पर प्रकाश डाला गया है। वहां उनके लिए संसाधन और गुप्त ठिकानों को उपलब्ध कराने की ज़िम्मेदारी मास्टर रुद्रनारायण जी ने सम्हाली। क्योंकि उन्हें पता था कि काकोरी कांड के बाद जिस तरह अंग्रेजी पुलिस क्रांतिकारियों की तलाश में कुत्तों की तरह घूम रही है। ऐसे में इनका सुरक्षित और गुप्त रहना बेहद ज़रूरी था। क्रांति की इन मशालों को हवाओं से बचाना था। इस संघर्ष में ऐसे अनगिनत नाम हैं जिन्होंने परोक्ष रूप में आज़ादी में अपनी महती भूमिका निभाई। मनीष जी ने ऐसे ही गुमनाम नामों को परिचित कराने का सफल प्रयास किया है "क्रांतिदूत" में।
झांसी फाइल्स में आज़ाद के कई अनछुए पहलुओं और रुद्रनारायण जी और मुन्नी भाभी (लेखक के पूज्य नाना और नानी जी) से पारिवारिक संबंध को भी बहुत ही स्नेहिल अंदाज में बताया गया है। यह विवरण सोचने के लिए मजबूर

कर देता है कि ऊपर से इतने कठोर दिखने वाले इन युवा क्रान्तिदूतों के अंदर भी चुहल हंसी मजाक और प्रेम जैसी संवेदनशील भावना बसती थी जो पारिवारिक माहौल मिलने पर स्वाभाविक रूप ने स्वतः ही उजागर हो उठती थी। ख़ैर इन क्रान्तिदूतों ने तो पूरे भारतवर्ष को ही अपना परिवार मान लिया था और परिवार को गुलामी की बेड़ियों से मुक्त कराने की शपथ उठा रखी थी।

किताब में कई जगह आज़ाद से जुड़े बहुत ही रोचक प्रसंग का चित्रण किया गया है जो अनायास ही होठों पर मुस्कुराहट और हृदय में उत्कंठा उत्पन्न करता है कि अब क्या होगा ! क्या आज़ाद और उनसे जुड़े लोगों का भेद खुल जायेगा!
ऐसा ही एक प्रसंग है "दम्बूक" शीर्षक में। हालांकि हम सबको पता है कि आज़ाद आजीवन आज़ाद ही रहे। अंग्रेजी हुक़ूमत की किसी गोली में इतनी हिम्मत न थी कि आज़ाद को छू भी पाती। लेकिन ये लेखक के कलम का ही जादू है कि ऐसे कई प्रसंगों में मन आशंका से भर उठता है।

क्रांतिदूत श्रृंखला ऐसे समय में आई है जब युवा पीढ़ी आज़ादी की बलिवेदी पर स्वयं को न्योछावर कर देने वाले इन क्रांतिवीरों के इतिहास के ज्ञान से लगभग अनभिज्ञ है। ऐसे समय पर ऐसी ज्ञानवर्धक किताबों की श्रृंखला प्रस्तुत करके मनीष जी ने समाज खासकर युवा वर्ग के लिए पथ प्रदर्शक की भूमिका निभाई है। पाठ्यक्रम में शामिल करने योग्य क्रांतिदूत सीरीज की अन्य पुस्तकें भी रोचक और ज्ञानवर्धक होंगी ऐसा विश्वास है।

किताब में प्रिंट और कहीं कहीं वाक्यों के समायोजन संबधी त्रुटियां अवश्य हैं लेकिन विषयवस्तु के आगे वे गौड़ हो जाती हैं। अंत में क्रांतिदूत श्रृंखला की सभी किताबों को हर भारतीय को अवश्य पढ़ना चाहिए।

किताब की सफलता के लिए अनेक शुभकामनाओं के साथ।

समीक्षक **-** वंदना "कपिल"

8 मई 2022

ट्विटर **-** @PandeyvandanaK